प्रभातकिरण
सितारों की बातें
इंदौर
रविवार
10 दिसंबर 2017

एक बार अमेरिकी अभिनेता और निर्देशक ने कहा था कि अंग्रेजी में शेक्सपियर हैं, फ्रेंच में मोलियर हैं और हमारे पास 'वेस्टर्न' हैं। हेल्मर स्कॉट कापर की 'होस्टाइल्स' से दुबई इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल की शुरुआत हुई। अभिनेता, निर्देशक कूपर ने बताया कि अमेरिका में नस्ल भेद मौजूद है और हाल के दिनों में यह और बढ़ गया है। ड्रामा फिल्म 'होस्टाइल्स' इसे बखूबी दिखाती है। अभिनेता से निर्देशक बने कूपर ने कहा कि मुझे उम्मीद है कि तेजी से आगे बढ़ते देश में इस पर बहस करना जरूरी है, जहां नस्ल भेद के कारण गुटबाजी तेजी से हो रही है। नस्ल भेद की ये हरकतें केवल अमेरिका तक नहीं हैं, और भी जगहों पर भयावहता लिए दिखाई दे रहा है। कूपर ने कहा कि यह दुःख का मानवीय रूप है। इस पर हम एक साथ कैसे आ सकते हैं, यह देखना होगा। मैंने इसी पर काम किया है।

रंगभेद पर चोट... 'होस्टाइल्स'...

'होस्टाइल्स' मूल कहानी पर बनी फिल्म है, जिसे स्क्रीन रायटर डोनाल्ड ई. स्टीवर्ट ने 1892 में लिखा था और अकादमी अवार्ड भी जीता था। इसमें क्रिश्चियन बेल महान सेनापति की भूमिका निभाता है, जो मरने वाले मूल निवासियों (रेड इंडियन) के मुखिया यलो हॉक और उसके परिवार को खतरों से बचाता है। बेल और मूल निवासियों से कैप्टन जोसेफ ब्लॉकर नफरत करता है। इसकी भी खास वजह थी। इस नफरत से पूरे अमेरिका के मैदानों के पार उनकी यात्रा में मिले दुःख को दूर करने और जनजातियों से नफरत मिटाने की यह कोशिश है।

ऐसे में **'होस्टाइल्स'** नस्लवाद के नाम पर नफरत फैलाने वालों को पहचानने, समझने की गंभीर कोशिश है, जो सबसे ज्यादा अमेरिकी सेना में मूल निवासियों के खिलाफ दिखाई देती है।

दुबई से गौतमन भास्करन

इस फिल्म की शुरुआत खूनी दृश्यों से होती है, जो घोड़ों की चोरी करने के लिए आए लोग करते हैं। सिर्फ रोसली क्वेड (रोजमुंड पाइक) बचती है और उसके पति और बच्चों को लुटेरे कबीले के लोग मार डालते हैं। एक अमेरिकी जेल में मूल निवासी, यलो हॉक को देखते हैं और जो गोरे लोगों का हत्यारा है। अब वो कैंसर से मर रहे हैं। उनकी आखिरी इच्छा है कि अपनी मातृभूमि पर अपना देश मोंटाना देखें। ब्लॉकर ने यह काम करने के लिए यलो हॉक को जिम्मा सौंपा है। इनका कप्तान जितना रेड आदिवासियों से नफरत करता है, उतना ही उसे अपने इस काम से भी नफरत है, लेकिन वह फिर भी यह आदेश मानता है, क्योंकि उसके पास कोई रास्ता नहीं है।

घोड़े पर बैठ कर लंबी यात्रा पर निकलता है और जब ब्लॉकर आता है, तो न्याय करता है। बाद में क्वेड भी इस समूह से जुड़ जाता है, जिसे भी मूल निवासी रेड इंडियन के खून की प्यास है। कूपर इस कथा में बहुत तनाव भर देते हैं। **'होस्टाइल्स'** दो घंटे से ज्यादा लंबी है और इसकी कहानी रेड इंडियन किरदारों से बाहर निकलने का मौका ही नहीं देती। कभी-कभी फिल्म एकतरफा चलती है, तो कभी-कभी कथानक से हटती नजर आती है, लेकिन सवाल यह उठता है कि शुरुआत के लिए नफरत भरी कहानी **'होस्टाइल्स'** क्यों ठीक लगती है। थोड़ी अंधेरों से भरी और कुछ-कुछ खूनी सी यह कहानी दुनिया में इन दिनों जो घट रहा है, उसे ही दिखा रही है। इसका अंत अच्छा है। दुबई फिल्म फेस्टिवल में कूपर की यह फिल्म ऊंची उड़ान भरती नजर आती है।